फरीदाबाद
# मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

व्हाट्सएप के जरिये भी अपनी बातें हम तक पहुँचा कर चर्चा का दायरा बढायें। मजदूर समाचार फोन पर पायें और अपने ग्रुपों में भेज कर आदान-प्रदान बढायें। हमारे इस नम्बर पर व्हाट्सएप मैसेज भेजें : 9643246782

**नई सीरीज नम्बर 364** **अक्टूबर 2018**

# गुंजायमान विविध स्वर

बातचीत कैसी रही ?

कौन सी बातचीत ?

अरे वो जो आप बोल रहे थे निरीक्षण-परीक्षण करने की। पूछने वाले थे आप अपने साथियों से। उनकी और उनसे पहले वाली पीढी के जीवन के तेवर पर।

और कुछ याद दिला। कुछ भूल-सा रहा हूँ।

अरे मजाक कर रहा है। ताऊ से इतनी बहस की कि असहाय मजदूर की भाषा को तहस-नहस कर देगा और नई जाँच-पड़ताल शुरू करेगा। कुछ याद है ? जीवन के उल्लास का विवरण एक नया परिवेश, एक अद्भुत स्थिति ले आयेगा।

अरे ये तो जीवन का तार है मेरा। भूल कैसे जाऊँगा। पर एक बात बताऊँ। तूने मेरे से बेहतर बोला है जो मैं सोचता हूँ।

थैन्क्यू-थैन्क्यू। आपकी इस उदारता से हमें खुशी मिली। बात पर तो आइये। कुछ बातचीत हुई ?

हुई। एक चीज समझ आई। बेहतरीन जवाब के लिये बेहतरीन सवाल भी चाहिये होता है। अगर सवाल मजबूरी पर हो तो उत्तर उसी तरफ बहता है। अगर सवाल उल्लासमय हो तो उत्तर उसी तरफ बहता है।

मेरे पड़ोस के एक कवि का कहना है कि जीवन के उल्लास से कविता बनती है। और कवि की सबसे बड़ी परीक्षा होती है कि कैसे लिखे जीवन पर चोट को, उल्लास की बलि दिये बिना।

तेरा पड़ोस तो बहुत बड़ा है यार। बहुत बड़ी दुनिया रच रही है यहाँ। मैंने पूछा एक से जिसने जीवन देखा है कि आप सब के लिये क्या छोड़ कर जाना चाहते हो।

अरे ! सब के लिये शब्द को तुम सुन्दर कल्पना में लाये हो। सुनने में बहुत अच्छा लगा – सब के लिये क्या छोड़ कर जाना चाहते हो ? इस सवाल में एक अन्त भी है, एक शुरुआत भी है। विशिष्ट भी है, अगणनीय भी है।

एक ने बोला मन्द पवन। मुझे लगा जैसे वो अपने आप को और सब को वादियों में गुंजायमान पाता है।

सवाल और सुनना बहुत जुड़े हुये हैं। आप अच्छा सुनते हो। आपका सुनना भी गुंजायमान है। कुछ सुनना, ना, कभी अपना हक जमाने में खत्म हो जाता है। असल में आप यह भी कह सकते हो कि हक जमाते-जमाते सुनना खत्म हो जाता है।

तेरा कहना है कि सुनना एक अभ्यास है। मुझे तो स्कूल से सिखाया गया है कि खाली लिखना-पढना अभ्यास है।

मुझे तो लगता है कि सुनने के इर्द-गिर्द सामाजिक उबाल उतने ही हैं जितने सोचने, लिखने, बोलने में हैं।

तुम जो कह रहे हो वह शायद अपने आप में महत्वपूर्ण है। हाल ही में एक फैक्ट्री में एक ड्युटी मैनेजर टाइम में और अवधि में सुन नहीं पाया कि उसे क्या बोला जा रहा है। बस। कुछ ही देर में मैनेजमेन्ट को फैक्ट्री छोड़ कर भागना पड़ा।

यह प्रबल पल द्वार है हमारे बौद्धिक जीवन के उतार-चढाव का। कुछ का शून्यीकरण उनके ना सुन पाने का परिणाम है। और एक नया द्वार खुलता है भिन्न स्वर के लिये।

और, जिनका शून्यीकरण हो चुका है, वो बहुत विलाप करते हैं। बोलते जाते हैं, बोलते जाते हैं, बोलते जाते हैं। बहुत हँसी आती है।

तो आप कह रहे हो कि हमारे बीच शून्यीकरण वालों के विलाप के शब्द काफी घूमते हैं। और उस पर हँसना ही चाहिये।

इस पर हँसेंगे नहीं तो भिन्न स्वर नहीं सुन पायेंगे। यहाँ हम सब साथियों को पता है कि भिन्न स्वर चारों तरफ हैं। लेकिन एक प्रोब्लम है। भागी मैनेजमेन्ट पुलिस ले कर वापस आती है, माफी माँगती है, समझौते की भाषा बोलती है और फिर अपनी जगह पर फिर पहुँचती है।

लेकिन स्थान अस्थिर रहता है। भिन्न स्वर गुंजायमान रहते हैं। और यहाँ पर हमारे सवाल बहुत महत्व लिये होते हैं। क्यों लिये होते हैं ? मुझे लगता है कि गुंजायमान भिन्न स्वर विश्व को, भविष्य को बनाते हैं।

संक्षेप में कहूँ तो हमारी बातचीत में यह रहे कि सत्ता बार-बार विस्थापित होती है और शून्यीकरण की तरफ जा रही है। हमारी यह समझ भिन्न स्वरों को गहराई और विस्तार देती है।

मैं तो अब से यह कहुँगी कि अपने बीच में विभिन्न स्वरों को सुनने की क्षमता को बढायें। वहीं से ताप आ रही है। सर्दियों में आराम रहेगा।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद - 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है। )

# तालमेल से हलचल

✶ **ऋचा एण्ड कम्पनी** (389 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में कम्पनी रोल पर 500 टेलरों को मैनेजमेन्ट एक-डेढ महीने से ठेकेदार कम्पनी के खाते में डालने लगी। इसके लिये जबरन रिजाइन लेना। 27 सितम्बर को दोपहर दो-ढाई बजे प्रोडक्शन में 9 नम्बर लाइन से हँगामा शुरू हुआ। शीशे-वीशे सब तोड़ दिये। फैक्ट्री से मैनेजमेन्ट भाग गई। पुलिस की चार गाड़ियों के साथ डेढ घण्टे में मैनेजमेन्ट फैक्ट्री लौटी। साहबों ने माफी माँगी और आगे से ऐसा नहीं करेंगे का आश्वासन दिया। उत्पादन शुरू।

✶ **ग्रोवर सन्स** (135 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 14 अगस्त को बैंक खातों में भेजे पैसों को कटिंग और पैकिंग वरकरों ने कम पाया। साहबों से कहा तो वे बोले कि सुपरवाइजर नहीं आया है, बाद में बतायेंगे। कटिंग और पैकिंग के 80-90 मजदूरों ने 17 अगस्त को दोपहर 3 बजे काम बन्द किया...... कम्पनी पे-स्लिप नहीं देती और ओवर टाइम के घण्टे नहीं बताती। पी एफ कार्यालय से सन्देश में 1000 रुपये के आसपास राशि हर महीने होती। इधर अगस्त की तनखा दी तब पी एफ से मैसेज में 1300 रुपये से ज्यादा राशि थी।

✶ **पी आई सी एल** ( 99 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में सीजन में 600 मजदूर रोज 12 घण्टे और रविवार को 8 घण्टे एयरकन्डीशनरों की मोटर बनाते हैं। मेन सीटों पर 60 परमानेन्ट मजदूर रहते हैं और बाकी काम टेम्परेरी वरकर करते हैं। टेम्परेरी भी बरसों से काम कर रहे हैं — ब्रेक दे कर फिर रख लेते हैं। डेढ वर्ष पहले की बात है। मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में मोबाइल ले जाने पर रोक लगा दी। परमानेन्ट और टेम्परेरी वरकर गेट के बाहर खड़े हो गये, फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। एक घण्टे में मैनेजमेन्ट पीछे हट गई।

✶ **नैस्ले रिसर्च** (सी पी-12 ए सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) सेन्टर में हाउसकीपिंग में दो शिफ्टों में 50 वरकर। महीने में 16 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान दुगुनी दर से। तनखा और ओवर टाइम मिला कर महीने में 9000 रुपये। इधर मैनेजमेन्ट ने सितम्बर-आरम्भ में ओवर टाइम बन्द कर दिया। इस पर 15 सितम्बर को दोनों शिफ्टों के हाउसकीपिंग वरकर इक्ट्ठे हो कर नैस्ले रिसर्च सेन्टर के बाहर बैठे।

# रोने–धोने के संग पेंच कसना भी बढायें

✶ **एन एच के** (31 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में टेम्परेरी वरकरों को पे-स्लिप नहीं देते और पी एफ में गड़बड़ी करते हैं — दो वर्ष काम किया है तो एक साल का फण्ड ही जमा करते हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। दुगुनी दर की बजाय ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से। 12 घण्टे में 4 घण्टे को ओवर टाइम कहते थे पर इधर सितम्बर में 3 घण्टे ओवर टाइम कहने लगे हैं। टी-ब्रेक भी 15 सितम्बर से बन्द कर दिया है।

✶ **एयरटेक इलेक्ट्रोविजन** (बी-70 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में चीन से कन्टेनरों में माल आता है। टी वी के पैनल, नाजुक चीज हैं, हर लॉट में 2-4 टूटे निकलते ही हैं। सितम्बर में 40 इन्च वाले दो टूटे निकले हैं और मैनेजमेन्ट पुराने मजदूरों के 20 हजार रुपये काटने की कह रही है। सितम्बर के आखिरी चार दिन लगातार ओवर टाइम : सुबह 8 से रात साढे आठ तक ड्युटी और फिर रात-भर काम, सुबह 4 बजे तक काम। चार घण्टे बाद, सुबह 8 बजे से रात साढे आठ बजे तक काम। ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से हैं लेकिन बीच में छुट्टी कर ली तो एक दिन के बदले कम्पनी दो दिन के पैसे काटती है।

✶ **ए एस के ऑटोमोटिव यूनिट** 7 (155-56 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में कम्पनी ने स्वयं 86 प्रेशर डाई कास्टिंग ऑपरेटर रखे हैं और 50 को ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखा है। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। चार साल से यह सब है पर इधर सितम्बर-आरम्भ से लोग पूरे हो गये हैं कह **(बाकी पेज तीन पर)**

# वीयरवेल मजदूरों की बातों पर विचार करें

बी-134 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री गेट पर 24 मई को सुबह पुलिस लगा कर मैनेजमेन्ट ने मजदूरों को फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने दिया। तब से करीब 550 परमानेन्ट मजदूर नौकरी से बाहर हैं। ओखला में 1 अक्टूबर को कुछ वीयरवेल मजदूरों ने बताया :

— यूनियन सदस्यता आदि के लिये प्रत्येक मजदूर से 200-200 रुपये लिये।

— फिर यूनियन ने जनरल डिमाण्ड नोटिस देने के लिये हर वरकर से 1100-1100 रुपये लिये।

— एफिडेविट बनवाने के लिये प्रत्येक मजदूर से मई में 270-270 रुपये यूनियन ने लिये।

— सितम्बर में यूनियन ने हर वरकर से 1000-1000 रुपये हाई कोर्ट में केस डालने के लिये। लीडर बोले कि वकील की फीस ही 52,000 रुपये है। (वैसे द्वारका में लेबर कोर्ट है और वहीं यूनियन गई है। हाई कोर्ट जाने की बात सरासर झूठ है।)

— इधर यूनियन ने हरेक वरकर से 250-250 फिर एफिडेविट बनवाने के लिये हैं।

— पैसे पर पैसे दो और नतीजा जीरो। हम में से सवा तीन सौ रिजाइन दे कर हिसाब ले गये। हम अब भी यूनियन के चक्कर लगा रहे हैं।

— जिस मजदूर का हिसाब एक लाख 80 हजार रुपये बना उससे रिजाइन ले कर वीयरवेल मैनेजमेन्ट ने एक लाख 12 हजार रुपये दिये और स्टाम्प पेपर पर 80 हजार रुपये चढाये। किसी वरकर का हिसाब पहले एक लाख 24 हजार रुपये बना रही थी तो अब मैनेजमेन्ट कहती है कि 85000 रुपये लेने हैं तो लो.......

(गुजरते हुये **पैरामाउन्ट वरकर :** कम्पनी हिसाब में मुझे डेढ लाख रुपये दे रही थी। यूनियन नेता ने 80 हजार रुपये का समझौता कर लिया।)

ऐसी बातों से अनजान कोई नहीं है। ऐसे में एक महत्वपूर्ण प्रश्न है : जानते हुये भी मन्त्री-अफसर, श्रम विभाग, कोर्ट, बिचौलियों के चक्कर में क्यों पड़ते हैं ?

और अधिक महत्व की बात है : ताकत का मजदूरों में होना जबकि प्रचार मजदूरों के कमजोर होने का है। इसलिये असल सवाल है : वरकर अपने जोड़, अपने तालमेल कैसे बढायें ?

# गेडोर–झालानी टूल्स......( पेज चार का शेष )

मैनेजमेन्ट-यूनियन गठजोड़ के खिलाफ गेडोर-झालानी टूल्स मजदूर लगातार विरोध करते रहे थे। वरकरों का विरोध बढता गया। इसलिये गुण्डागर्दी। यह मजदूरों का विरोध था जिसके कारण पहले सरकारी संस्थाओं और फिर दिल्ली हाई कोर्ट ने कम्पनी को समाप्त करने के फैसले दिये। इन फैसलों के खिलाफ मैनेजमेन्ट अपील पर अपील करती रही। दिल्ली हाई कोर्ट ने लेनदारों से अपने-अपने दावे पेश करने को कहा। यूनियनों के दाँवपेचों के बावजूद कई मजदूरों ने दावे किये। अपने-अपने दावे किये पर अकेले-अकेले नहीं किये, आपस में तालमेल कर वरकरों ने दावे किये। फरीदाबाद फैक्ट्रियों में सक्रिय मजदूरों ने कम्पनी की अन्य शहरों में फैक्ट्रियों के वरकरों से सम्बन्ध स्थापित किये और आपस में तालमेल बढाये। फरीदाबद में यूनियन ने दावे नहीं डाले और अपील में मैनेजमेनट की मदद करती रही।

कम्पनी नीलाम। कम्पनी की सम्पत्ति से देनदारी बहुत ज्यादा थी। फरीदाबाद में मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते में जिन मजदूरों के नाम थे उनके समझौते अनुसार बीस-तीस हजार रुपये बने। जिन मजदूरों ने दावे किये थे उनके दो-तीन लाख रुपये के दावे हाई कोर्ट ने माने।

फरीदाबाद में कई फैक्ट्रियाँ बन्द हुई हैं। यूनियनों ने मैनेजमेन्टों से समझौते किये हैं। कम्पनियों के अपने कानूनों के अनुसार जो राशि मजदूरों की बनती थी उसके दसवें हिस्से पर मैनेजमेन्ट और यूनियन ने समझौते किये। और कोर्ट-कचहरी में ऐसे समझौते काम करते रहे हैं।

# बोनस.... बात लेने की है

●कम्पनियों के अपने कानूनों के अनुसार: वर्ष में बोनस में कम से कम एक महीने की तनखा है और अधिक से अधिक बोनस में ढाई महीने की तनखा है।

●परमानेन्ट मजदूर हों, चाहे कम्पनी रोल पर कैजुअल वरकर हों, चाहे ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूर हों : कम्पनियों के अपने कानूनों के अनुसार सब वरकरों का बोनस बनता है।

●पहली अप्रैल 2017 से 31 मार्च 2018 के दौरान किसी फैक्ट्री में 30 दिन काम किया है तो कम्पनियों के अपने कानून अनुसार इस दिवाली पर वरकर का बोनस बनता है। एक फैक्ट्री में 3 महीने, दूसरी फैक्ट्री में 2 महीने, तीसरी फैक्ट्री में 6 महीने अप्रैल 2017 से मार्च 2018 के बीच किसी मजदूर ने काम किया है तो तीनों फैक्ट्रियों में इस दिवाली पर उस वरकर का बोनस बनता है। काम किये दिनों की सँख्या अनुसार बोनस की राशि बनती है।

●कम्पनी घाटा बताती-दिखाती है तो भी कम्पनियों के अपने कानूनों के अनुसार वर्ष में बोनस में एक महीने की तनखा है।

**कम्पनियों के बही-खातों की चीर-फाड़ करने पर :** एक वरकर एक महीने में फैक्ट्री में बीस लाख रुपये के बराबर का उत्पादन करती है। फैक्ट्री से एक महीने में एक मजदूर आठ-दस हजार रुपये से पचास-साठ हजार रुपये से एक लाख रुपये तक लेता है। **घाटे की कहानी :** मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका पचास-साठ प्रतिशत हिस्सा सरकारें टैक्सों में ले लेती हैं। फैक्ट्री बनाने और संचालन में लगते पैसों का अस्सी-पिचासी प्रतिशत हिस्सा कर्ज होता है। मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका करीब पन्द्रह प्रतिशत कर्ज पर ब्याज के भुगतान में जाता है। फैक्ट्री बनाने और संचालन में लगते पैसों का पन्द्रह-बीस प्रतिशत लाखों शेयरों से आता है। मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका दस-बारह प्रतिशत शेयर होल्डरों को डिविडेन्ड के रूप में जाता है। मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक हिस्सा कम्पनी के विस्तार में जाता है। **और चोरी :** चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर, डायरेक्टर, जनरल मैनेजर, मैनेजर, सुपरवाइजर तनखा आदि के रूप में मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक छोटा हिस्सा लेते हैं। मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका करीब पन्द्रह प्रतिशत हिस्सा साहब लोग चोरी करते हैं। मालिक-वालिक वाली बातें नानी की नहीं बल्कि नानी की नानी की कहानियाँ हैं। चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर तथा मैनेजमेन्ट के अन्य लोग कम्पनी की चोरी करते हैं। पद अनुसार बड़ी और छोटी चोरी करते हैं। यह विश्व-भर में है और हर कम्पनी में सौ वर्ष से चल रहा है।

कम्पनी बहुत कमजोर। कम्पनी बहुत-ही कमजोर। आज कम्पनियों की यह दो कैटेगरी हैं। कम्पनियों का बन्द होना एक सामान्य बात है। और, मजदूरों की कम्पनी से कोई नातेदारी नहीं होती। वरकर और कम्पनी का रिश्ता काम, सिर्फ काम के इर्द-गिर्द होता है।

'' हमारे यहाँ नहीं देते'' का रोना छोड़िये। जहाँ-जहाँ पिछले वर्ष बोनस नहीं दिया वहाँ दिवाली से पन्द्रह दिन पहले उत्पादन के पेंच कसने आरम्भ करना बनता है। जहाँ-जहाँ बोनस में एक महीने की तनखा ही दी वहाँ भी दिवाली से 15 दिन पहले प्रोडक्शन पर असर डालना शुरू करना बनता है। हाथों से बोलते हैं तब मुँह से बोलने की जरूरत ही नहीं रहती।

बात लेने की होती है। बात लेने की है।

# सूचना

मजदूर समाचार का जनवरी 2019 का अंक छापेंगे लेकिन पुराने बाँटने वाले उसे बाँटेंगे नहीं। इन कुछ वर्षों में जो बाँटने के लिये मजदूर समाचार की प्रतियाँ लेने लगे हैं वे जनवरी 2019 अंक की जितनी प्रतियाँ लेना चाहते हैं वह हमें बता दें। नये लोग अगर बाँटना चाहते हैं तो वे भी हमें इस बीच जानकारी दे दें। प्रतियाँ हम पहुँचा देंगे। जनवरी 2019 में मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद आ कर भी प्रतियाँ ले सकते हैं। अच्छा रहेगा अगर हमें पहले से पता रहे कि मजदूर समाचार के जनवरी 2019 अंक की कितनी प्रतियाँ छापनी हैं।

# साझेदारी

✶आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

**— मंगलवार, 30 अक्टूबर को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।**

**— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास सोमवार, 29 अक्टूबर को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।**

**— बुधवार, 31 अक्टूबर को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।**

✶ फरीदाबाद में अक्टूबर में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

# सन्देश

**फोन पर मैसेज तो छोटे हो सकते हैं पर व्हाट्एसप पर अपनी बातें कहने में कँजूसी छोड़ें।**

✶**साहू एक्सपोर्ट** (98 उद्योग केन्द्र, इकोटेक 3, ग्रेटर नोएडा) फैक्ट्री में ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से दिखाते हैं पर देते सिंगल रेट से हैं। ✶**वीयरवेल** (बी-43, 44 हौजरी कॉपलैक्स, नोएडा फेज-2) फैक्ट्री से 3 अक्टूबर को मैनेजमेन्ट ने दो मजदूरो का हिसाब ''रिलेशन का बहाना बना कर'' कर दिया। ✶**डिगानिया मेडिकल डिवाइसेज** (251, 275 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 6 वर्ष से काम कर रहे 45 मजदूरों को अचानक 29 सितम्बर को मैनेजमेन्ट ने कहा : 1 अक्टूबर से ड्युटी नहीं आना ; ठेका खत्म कर दिया है ; ठेकेदार कम्पनी से जा कर मिलो। वरकर: ''हम लोग आज तक कभी ठेकेदार से नहीं मिले। ना ही हम उसे पहचानते हैं। जो भी हमारा काम होता है वह सारा डिगानिया मेडिकल डिवाइसेज से होता है।'' ✶**ध्रुव ग्लोबल** (84 सैक्टर-25, फरीदाबाद) गारमेन्ट फैक्ट्री में महीने के तीसों दिन ड्युटी। दो अक्टूबर को भी फैक्ट्री में उत्पादन। मैनेजमेन्ट रात 1 बजे तक जबरन रोकती है। देर रात यातायात का कोई साधन नहीं होता। सुनसान रास्तों में मजदूरों से मोबाइल छीनना होता है। बायर का नाम : ट्रू रिलिजन।

## रोने... पेंच कसना.....( पेज दो का शेष )

कर सुबह और साँय कम्पनी रोल पर जो ऑपरेटर हैं वो फैक्ट्री गेट से लौटाये जा रहे हैं। मैनेजमेन्ट का कुछ लफड़ा है, पता नहीं क्या प्लान बना रही है। ✶**कैलाश रिबन** (403 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में तनखा देरी से — अगस्त की 18 सितम्बर को दी। ओवर टाइम के पैसे भी देरी से। तनखा से काटी राशि भी मार्च से पी एफ कार्यालय में जमा नहीं की है। रिजाइन के पाँच महीने बाद भी 30-35 वरकरों को ग्रेच्युटी नहीं दी है। ✶**ए जी इन्डस्ट्रीज** (8 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में मेन्टेनैन्स और पेन्ट शॉप में परमानेन्ट मजदूर काम करते हैं लेकिन प्रोडक्शन में परमानेन्ट मजदूर अपना काम टेम्परेरी वरकरों पर डाल देते हैं। मैनेजमेन्ट तो दुभान्त करती ही है : परमानेन्ट की 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट जबकि टेम्परेरी की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट ; महीने में परमानेन्ट को 4-4 घण्टे के दो गेट पास जबकि टेम्परेरी को कोई गेट पास नहीं.....

# ताना–बाना, वैश्विक ताना–बाना

इन 36 वर्षों के दौरान मजदूर समाचार कई बदलावों से गुजरा है। वितरण में इधर आ रहे उल्लेखनीय परिवर्तन की एक झलक यहाँ प्रस्तुत है।

✶1982 में फरीदाबाद मजदूर समाचार छापना आरम्भ किया था। महीने में 1000 प्रतियाँ छापते थे और फिर 2000 हुई। 1993 में मजदूर समाचार की 5000 प्रतियाँ छपने लगी तब फरीदाबाद में एक फैक्ट्री में परमानेन्ट मजदूर ने ड्युटी जाते समय मजदूर समाचार की एक प्रति लेनी आरम्भ की थी। कुछ वर्ष पहले वह फैक्ट्री बन्द हो गई। मजदूरों को हिसाब नहीं मिला। महीने के तीसों दिन 12-12 घण्टे की शिफ्टों में गार्ड की ड्युटी करने लगे उस वरकर ने वर्ष-भर पहले कॉलोनी में रहने वालों के लिये 15 प्रतियाँ लेनी आरम्भ की। तेजी से 50 से 100 से 200 की राह वे 500 कॉपी लेने लगे और अब 1200 प्रतियाँ बाँटते हैं तथा अधिक की आवश्यकता बताते हैं। सात-आठ दिन में बाँटते हैं: ''12 घण्टे की रात की ड्युटी के बाद दो घण्टे खड़े-खड़े मजदूर समाचार बाँटता हूँ तब पैर सूज जाते हैं पर मजा आ जाता है।''

✶ओखला औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली से फैक्ट्री नोएडा, उत्तर प्रदेश शिफ्ट हुई। ओखला में 2004 से मजदूर समाचार ले रहे वरकर अब नोएडा में 400 प्रतियाँ दो स्थानों पर बाँटते हैं।

✶आई एम टी मानेसर में शिफ्टों में ड्युटी की वजह से एक वरकर 2013 में सहकर्मियों को देने के लिये मजदूर समाचार की 50 प्रतियाँ बाल काटने की दुकान पर रखवाने लगा। फैक्ट्री के नजदीक रहने के लिये उस वरकर ने कमरा बदला और हेयर कटिंग दुकान से दो-तीन किलोमीटर दूर हो गया। कुछ समय तक उस दुकान से प्रतियाँ लेने आता रहा। इधर आई एम टी मानेसर में दूसरे स्थान से मजदूर समाचार की 400 प्रतियाँ लेता है। सहकर्मियों को देने के अलावा अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों तक अपने साथियों के सहयोग से पहुँचाता है। और, हेयर कटिंग दुकान से कई फैक्ट्रियों के मजदूर ले जाते हैं इसलिये दुकान के वरकर मजदूर समाचार की 200 प्रतियाँ ले कर रखते हैं।

✶नोएडा ड्युटी करता एक वरकर सराय, फरीदाबाद से मजदूर समाचार की प्रति लेने लगा। कुछ समय बाद 5 प्रतियाँ ले जाने लगा। फिर 15 से 50 से 75 होते हुये 150 प्रतियाँ नोएडा में मजदूरों तक पहुँचाने के लिये लेनी शुरू की। इधर तेजी से 250 से 300 से 400 से 500 होते हुये अब नोएडा में मजदूर समाचार की 600 प्रतियाँ वरकरों के बीच वे पहुँचा रहे हैं।

✶एक गारमेंट फैक्ट्री में 2014 में मजदूरों के विद्रोह के बाद एक वरकर ने मजदूर समाचार की 50 प्रतियाँ लेनी शुरू की थी: 25 सहकर्मियों के लिये और 25 डाक द्वारा मित्रों को भेजने के लिये। नोएडा काम करने चले गये तो सम्पर्क टूट गया। फरीदाबाद लौटे और 100 प्रतियाँ लेने लगे। बढा कर 200 से 400 होते हुये अब वे हर महीने मजदूर समाचार की 500 प्रतियाँ बाँटते हैं।

✶एक मैटल पॉलिश वरकर ओखला से नोएडा होते हुये फरीदाबाद पहुँचे हैं। हर महीने बाँटने के लिये मजदूर समाचार की 500 प्रतियाँ लेते हैं।

✶एक वरकर बाँटने के लिये 100 प्रतियाँ मजदूर समाचार की लेने लगे। तीन महीने बाद लेनी बन्द कर दी। लगा कि डराये-धमकाये गये हैं। कुछ समय बाद माँगने पर एक प्रति दी तो 100 माँगी। फिर 200 से 500 होते हुये 1000 प्रतियाँ लेने लगे। इधर उन्होंने मजदूर समाचार की 5000 प्रतियाँ बाँटने के लिये माँगी...... बताया कि वो दो साथी बाँटते हैं। अगस्त में 2000 और सितम्बर में 3000 प्रतियाँ मजदूर समाचार की उन्होंने बाँटी हैं।

✶ ड्युटी जाते समय मजदूर समाचार लेती एक वरकर सहकर्मियों के लिये 30-40 प्रतियाँ लेने लगी। फैक्ट्री में नौकरी करते 9 वर्ष हुये तब उन्होंने नौकरी छोड़ दी ताकि पेन्शन स्कीम में फण्ड के पैसे नहीं फँसें। वे दूसरी फैक्ट्री में लग गई और वहाँ अपने सहकर्मियों के लिये हर महीने मजदूर समाचार की 30-40 प्रतियाँ ले जाती हैं।

✶फौज से रिटायर होने के बाद फरीदाबाद में कई फैक्ट्रियों में गार्ड की ड्युटी कर चुके हैं। दिन की 12 घण्टे की शिफ्ट से छूटने के बाद मजदूर समाचार की 50 प्रतियाँ लेते हैं और फैक्ट्रियों के गेटों पर गार्डों को देते हुये घर जाते हैं।

✶कई वरकर 2-3-5 प्रतियाँ सहकर्मियों के लिये लेते हैं। कुछ लोग 10-15-20 प्रतियाँ भी लेते हैं। एक वरकर ने मजदूर समाचार लेते हुये कहा: '' इसे फैक्ट्री में 25-30 लोग पढेंगे।'' और चाहियें क्या पूछने पर वे बोले: ''नहीं। एक कॉपी को 25-30 लोगों को तो पढना ही चाहिये।'' पर हाँ, देखा-देखी में लेते कुछ लोगों में मोड़-तोड़ कर फेंकने वाले भी होते हैं।

✶ अपने पूर्वाग्रह से पिण्ड छुड़ा कर 2016 में इन्टरनेट का सामान्य प्रयोग आरम्भ किया। व्हाट्सएप के जरिये मजदूर समाचार मिलने पर मारुति सुजुकी गुड़गाँव फैक्ट्री के एक टेम्परेरी वरकर ने मैसेज किया: ''मजदूर समाचार पढने के लिये बँटने के दिन का इन्तजार करना पड़ता था। अब व्हाट्सएप पर शीघ्र मिल गया। पढ कर अपने ग्रुप में फार्वर्ड कर दिया है।'' इधर बड़ी सँख्या में वरकर मजदूर समाचार को अपने-अपने व्हाट्सएप ग्रुपों में फार्वर्ड कर रहे हैं।

✶एक मित्र इन्टरनेट पर मजदूर समाचार का ब्लॉग बना कर कुछ वर्षों से उसे चला रही हैं। ब्लॉग में कुछ सामग्री अँग्रेजी में भी है। इधर साथियों ने नियमित तौर पर मजदूर समाचार के पहले पन्ने का अँग्रेजी में अनुवाद आरम्भ कर दिया है। इस ने ईमेल के माध्यम से आदान-प्रदान की वैश्विक राह पर गति को बढा दिया है। और, एक अन्य मित्र मजदूर समाचार तथा सम्बन्धित सामग्री हिन्दी व अँग्रेजी में इन्टरनेट पर उपलब्ध करवाने के लिये एक और साइट बना रही हैं।

✶✶✶आदान-प्रदान के ताने-बाने को बढाने में योगदान अपनी रुचि और सुविधा अनुसार करें।

## गेडोर–झालानी टूल्स

गेडोर-झालानी टूल्स के जिन मजदूरों ने दिल्ली हाई कोर्ट में लेनदारी के दावे डाले थे उनके लिये सूचना: उच्च न्यायालय द्वारा स्वीकृत राशि का 44 प्रतिशत इन वरकरों को कुछ वर्ष पहले मिल चुका है। इधर दिल्ली हाई कोर्ट ने लिक्वीडेटर को आदेश दिया है कि इन मजदूरों की बकाया 56 प्रतिशत राशि का भुगतान तत्काल करे। इसके लिये यह वरकर: 1) बैंक पासबुक की फोटोकॉपी जिसमें IFSC और MICR बैंक कोड हों; 2) दिल्ली हाई कोर्ट में केस नम्बर; 3) लिक्वीडेटर ऑफिस से राशि स्वीकृत पत्र वाला रेफरेन्स नम्बर, यह तीनो दिल्ली में लिक्वीडेटर ऑफिस में फिर पहुँचा दें।

**सब मजदूरों के लिये एक अनुभव :** गेडोर-झालानी टूल्स की 6 फैक्ट्रियाँ थी। तीन फरीदाबद में और एक-एक कुण्डली (सोनीपत) तथा महाराष्ट्र में औरंगाबाद व जालना शहरों में। कम्पनी को बचाने के नाम पर मैनेजमेन्ट-यूनियन-प्रशासन की गिरोहबन्दी ने 1985-86 में 2300 मजदूर जबरन नौकरी से निकाले। कम्पनी 1987 में सरकार द्वारा बीमार घोषित। बीमार को रियायतें। कम्पनी को चलती रखने के लिये मजदूरों की कई महीनों की तनखायें बकाया की गई, ई एस आई तथा पी एफ की राशि जमा नहीं की गई, ग्रेच्युटी की राशि इस्तेमाल कर ली गई, रिटायर होते वरकरों को हिसाब नहीं, जिनसे मैटेरियल लिया उन्हें भुगतान नहीं, बैंकों से लिये कर्जों की किश्त जमा नहीं.... और मजदूरों को डराने-धमकाने के लिये मैनेजमेन्ट-यूनियन-पुलिस सक्रिय रही। फिर भी मजदूरों के हस्तक्षेप के कारण सन् 2000 में सरकारी संस्था द्वारा '' कम्पनी चलने लायक नहीं'' की घोषणा। मामला 2001 से दिल्ली हाई कोर्ट में। फरीदाबाद में तीन फैक्ट्रियों की यूनियन और मैनेजमेन्ट ने एक समझौता दिल्ली उच्च न्यायालय में दाखिल किया जिसमें कम्पनी चलती रखने के लिये मजदूर अपनी नब्बे प्रतिशत लेनदारी छोड़ने को राजी दिखाये।

(बाकी पेज दो पर)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। RN 42233
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।